साप्ताहिक
Live not just breaTHE

दि कार्मिक पोस्ट

MPHIN/2015/63220
MP/IDC1528/16-18

वर्ष : 5, अंक : 16 (प्रति बुधवार), इन्दौर, 11 दिसम्बर से 17 दिसम्बर 2019 पेज : 4 कीमत : 3 रुपये

माइनस 25 डिग्री पर भी अडिग वतन और पर्यावरण के प्रहरी

सियाचिन में भी सेना का स्वच्छता अभियान जारी

जम्मू, विवेक सिंह। विश्व के सबसे ऊंचे युद्धस्थल सियाचिन ग्लेशियर में खून जमा देने वाली ठंड है। हिमस्खलन का खतरा भी सिर पर मंडराता है। बीते दिनों ही सेना के आठ जवान इसमें फंस शहीद हो गए। बावजूद इसके जवानों का समर्पण देखते बन रहा है। वतन और पर्यावरण के ये प्रहरी हर चुनौती को मात देते देखे जा सकते हैं।

सियाचिन ग्लेशियर में परतापुर इलाके से ऊपर स्थित बेस कैंप में इस समय तापमान शून्य से करीब 25 डिग्री नीचे है। वहीं ग्लेशियर के ऊपरी इलाकों में तापमान शून्य से 45 डिग्री कम है। जनवरी में तापमान शून्य से 60 डिग्री नीचे तक गिर जाता है।

चालाक दुश्मन, बेरहम मौसम और लगातार बढ़ रहा कचरा सियाचिन में गंभीर चुनौतियां पैदा कर रहा है। इन सबके बीच, सर्दियों में सियाचिन में हिमस्खलन का खतरा सबसे बड़ी चुनौती है। सेना ने बीते दिनों क्षेत्र में हुए दो बड़े हिमस्खलन में आठ सैनिक और दो पोर्टर खोए हैं।

सियाचिन में दुश्मन के मंसूबों को नाकाम बनाने के लिए सेना वर्ष 1984 से डेरा डाले बैठी है। सेना की रोजमर्रा की जरूरतों को पूरा करने से वहां पर खासा कचरा भी पैदा होता है। पहले इससे निपटने के लिए कुछ खास नहीं होता था। दो वर्ष से कचरा हटाने की मुहिम तेज हो गई है। सियाचिन स्वच्छता अभियान 10 हजार फीट उंचाई से लेकर 22 हजार फीट ऊंचाई पर स्थित बाना पोस्ट तक जारी है। जवानों को निर्देश हैं कि वे पेट्रोलिंग से वापसी के दौरान अपने साथ 10 से 12 किलोग्राम तक कचरा भी समेट लाएं। सियाचिन के आधार शिविर तक पहुंचाने के दो साधन हैं। या तो हेलीकॉप्टर में या फिर कंधों पर उठाकर। इस मुहिम के तहत सेना की उत्तरी कमान की 14 कोर अब तक करीब 150 टन कचरा सियाचिन से हटा चुकी है। लक्ष्य है कि सेना हर साल सियाचिन से 100 टन से अधिक कचरे को हटाकर पर्यावरण संरक्षण करेगी।

अनुमान के अनुसार वर्ष 1984 से अब तक सियाचिन में आठ हजार टन कचरा एकत्र हुआ है। सियाचिन की अत्याधिक ठंड में कचरा खत्म नहीं होता है। जनवरी 2018 से यहां पर्यावरण संरक्षण की मुहिम तेज हुई है। स्थानीय लोगों की सहायता से लेकर कचरे को नोबरा के निकट एकत्र किया जाता है। बाद में कचरे को सेना तीन मशीनों से खत्म करती है। नष्ट कचरे को नोबरा के गांवों में लोग खाद के रूप में खेती में इस्तेमाल करते हैं। गैर जैविक कचरे को इन्सेनेटर मशीन से राख में तब्दील कर दिया जाता है। वहीं धातु कचरे का अलग निपटान किया जाता है।

अंतरराष्ट्रीय पर्यावरण ओलम्पियाड 12 से

लखनऊ। सिटी मॉन्टेसरी स्कूल गोमतीनगर (द्वितीय कैम्पस) की ओर से चार दिवसीय अंतरराष्ट्रीय पर्यावरण ओलम्पियाड 12 से 15 दिसंबर तक सीएमएस कानपुर रोड ऑडिटोरियम में होगा। ओलम्पियाड में नेपाल, बांग्लादेश और देश के अलग-अलग राज्यों के कारीब 500 छात्र हिस्सा लेंगे। यह जानकारी रविवार को प्रेस कॉन्फ्रेंस में कार्यक्रम की संयोजिका मंजीत बत्रा ने दी। उन्होंने बताया कि इस दौरान पर्यावरणीय मुद्दों पर छात्र और विशेषज्ञ अपनी राय देंगे। उन्होंने कहा कि ग्लोबल वॉर्मिंग और जलवायु परिवर्तन के इस नाजुक दौर में युवा पीढ़ी को पर्यावरण की स्थिति से रूबरू करवाना जरूरी है, ताकि किशोर और युवा पर्यावरणीय चुनौतियों को समझकर अपने नजरिए में सकारात्मक बदलाव लाएं। इस दौरान स्कूल के संस्थापक डॉ. जगदीश गांधी ने कहा कि इस तरह के सम्मेलन से बच्चों को मौजूदा समय में हो रही परेशानियों और उनका हल जानने का मौका मिलता है।

पर्यावरण संरक्षण एवं सुधार समिति के प्रधान बने वीरेंद्र

रोहतक। पर्यावरण संरक्षण एवं सुधार समिति की आम सभा की बैठक सोमवार को हुडा सिटी पार्क में हुई। इसकी अध्यक्षता धर्मपाल दांगी ने की। इसमें पूर्व कार्यकारिणी ने अपने कार्यकाल का लेखा-जेखा प्रस्तुत किया और आम सहमति से नई कार्यकारिणी का गठन किया गया। इसमें वीरेंद्र सुहाग को प्रधान, प्रेम काजल को उप प्रधान, डॉ. सुरेश कुमार कौशिक को महासचिव, राकेश राठी को सचिव और सतीश बजाज को कोषाध्यक्ष चुना गया। इस अवसर पर डॉ. बलवान गहलोत, मनदीप, राजेश गोयत, धर्मवीर सिंधु, बलवान खन्ना, रमेश, जेपी मलिक, बलजीत, सुरेंद्र नैन आदि मौजूद रहे।

वन्य प्राणी व पर्यावरण संरक्षण की जागरुकता बढ़ाने के लिए ईको अनुभूति कैम्प

देवास। स्कूली विद्यार्थियों में वन्य प्राणी एवं पर्यावरण संरक्षण के प्रति जागरुकता बढ़ाने के लिए प्रतिवर्ष प्रशिक्षण व जागरूकता कैंप का आयोजन जिले के सभी वन परिक्षेत्रों में किया जएगा। इस वर्ष भी 15 दिसंबर 2019 से 15 जनवरी 2020 के बीच इनका आयोजन होगा।

वन मंडलाधिकारी देवास पीएन मिश्रा ने बताया कि वन विभाग द्वारा अनुभूति कार्यक्रम के अंतर्गत अनुभूति कैंप जिले की समस्त तहसील एवं वन परिक्षेत्रों में वनों से 10 किलोमीटर की परिधि में आने वाले शासकीय एवं प्राइवेट स्कूलों में होगा। इनमें 9वीं से 11वीं तक के विद्यार्थियों को कैंप में सहभागिता के लिए बुलाया जाएगा। कैंप में पर्यावरण के प्रति जागरुकता, पक्षी दर्शन, प्रकृति पथ पर वन भ्रमण, विभिन्न वृक्षों की उपयोगिता, वन्यप्राणियों के विषय में ज्ञान, वन औषधी, जैवविविधता, वन नर्सरी विषयों पर कार्यक्रम आयोजित किए जाएंगे। कैंप सुबह 8:00 बजे से शाम 4:00 बजे तक आयोजित होगे। कैंप में छात्र-छात्राओं के अतिरिक्त स्थानीय जनप्रतिनिधि भाग लेंगे। कार्यक्रम के अंत में विद्यार्थियों को पुरस्कार वितरण किया जाएगा। देवास जिले में 24 अनुभूति कैंपों का आयोजन किया जाएगा जिसमें लगभग 3 हजार विद्यार्थी भाग लेंगे

बिहार में बनेगी 16200 किलोमीटर लंबी मानव श्रृंखला

पर्यावरण संरक्षण का संदेश देने की तैयारी

पटना

बिहार में एक बार फिर मानव श्रंखला के जरिए पर्यावरण संरक्षण का संदेश देने की तैयारी शुरू हो गई है. राज्य के नागरिक अगले वर्ष 19 जनवरी को एक-दूसरे का हाथ थामकर जल-जीवन-हरियाली अभियान का समर्थन करते हुए पर्यावरण संरक्षण का संदेश देंगे. मुख्यमंत्री नीतीश कुमार के निर्देश पर राज्य में तीसरी बार मानव श्रंखला बनने जा रही है. 19 जनवरी, 2020 को पूरे राज्य के लोग एक-दूसरे का हाथ पकड़ कर खड़े होंगे. इस बार की मानव श्रंखला कम से कम 16,200 किलोमीटर लंबी होगी.

इस आयोजन के लिए नोडल बने शिक्षा विभाग के अपर मुख्य सचिव आर. के. महाजन ने राज्य के सभी जिलाधिकारियों, पुलिस अधीक्षकों सहित अन्य अधिकारियों को दिशा-निर्देश जारी किए हैं. निर्देश के मुताबिक, जिलों में जिलाधिकारी और पुलिस अधीक्षक मानव श्रंखला बनने का रूट तय करेंगे. मुख्य सड़कों के साथ सहायक सड़कों पर भी मानव श्रंखला बनाई जाएगी, जिसमें वर्ग एक से पांच तक के बच्चे भाग नहीं लेंगे. सभी जिलों के जिलाधिकारियों से 10 दिसंबर तक मानव श्रंखला का रूट मांगा गया है.

निर्देश के मुताबिक, इस मानव श्रंखला की शुरुआत मुख्यमंत्री नीतीश कुमार पटना के गांधी मैदान से करेंगे. सुबह 11.30 से दोपहर 12 बजे तक बनने वाली इस मानव श्रंखला में सरकारी कर्मचारियों, संविदाकर्मियों, सरकारी-गैरसरकारी विद्यालयों, महाविद्यालयों के शिक्षकों और कर्मियों, जीविका दीदी, आशा कार्यकर्ता, सेविका, सहायिका और छात्र-छात्राएं शामिल होंगे. इसके लिए प्रचार-प्रसार भी किया जाएगा. उल्लेखनीय है कि पहले भी शराबबंदी को लेकर बिहार में मानव श्रंखला का आयोजन किया जा चुका है.

वहीं, इससे पहले मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने मंगलवार को चंपारण की धरती से अपनी जल-जीवन-हरियाली यात्रा की शुरुआत की. इस यात्रा के क्रम में लोगों को जल और हरियाली के विषय में जागरुक किया जा रहा है. बिहार में पहले 15 फीसदी जमीन पर हरियाली, पेड़-पौधे हैं, लेकिन अब सरकार की इसे अगले कुछ सालों में 17 प्रतिशत करने की योजना है. इस यात्रा का मुख्य उद्देश्य लोगों को पर्यावरण के प्रति जागरूक करना भी है. गौरतलब है कि मुख्यमंत्री पहले भी यात्राओं पर निकलते रहे हैं. इस दौरान वो जनता से सीधे जुड़ने की कोशिश करते हैं।

क्या धर्म पर्यावरण का रक्षक है?

हम जानते है धरती कभी आग का गोला थी, पर्यावरण ने इसे रहने लायक बनाया और प्रकृति ने मुनष्यों सहित सारे जीवों, पेड़-पौधों का क्रमिक विकास किया। प्रकृति और जीव एक दूसरे के पूरक हैं। प्रकृति सत्य है, जो धर्म को धारण करती है, इसीलिए ब्रह्माण्ड में केवल धरती पर ही जीवन है। बिना प्रकृति के न तो जीवन उत्पन्न हो सकता है और न ही धर्म। इसीलिए धर्म मनुष्य को प्रकृति के रक्षा सीख देती है।

इन पंच तत्त्वों के उचित अनुपात से ही चेतना (जीवन) उत्पन्न होती है। धरती, आकाश, हवा, आग, और पानी इसी के संतुलित चक्र से ही धरती पर पर्यावरण निर्मित हुआ है, जो जीवन के मूल तत्व हैं। धर्म मे ही इन प्रकृति के तत्त्वों को पूजा, आराधना और तपस्या से जोड़ा गया है। हमारे शरीर और मन को प्रकृति ही नियंत्रित करती है। यह प्रकृति ही ईश्वर का स्वरूप है, यानी ईश्वर प्रकृति को संचालित करता है लेकिन जब मुनष्य स्वार्थवश प्रकृति के साथ खिलवाड़ करना आरंभ करता है तो प्रकृति का कूपित होना स्वाभाविक है। प्रकृति के किसी भी एक तत्व का संतुलन बिगड़ता है, तो इसका प्रभाव हमारे ऊपर पड़ता है। बाढ़, भूस्खलन, भूकंप, ज्वालामुखी उद्गार जैसी देवीय आपदा सामने आती हैं।

प्राकृतिक तत्वों में संतुलन की सीख देता धर्म

धर्म हमें प्रकृति की रक्षा करना सीखाता है। धर्म हमें नैतिक, सद्विचार और विवेकशील प्राणी बनाता है। हम अच्छे काम तभी कर सकते हैं, जब हम प्रकृति की रक्षा करना सीख जाए। इसीलिए हर धर्म प्रकृति के साथ संतुलन बना कर रहने की सीख देता है। अप्राकृतिक यानी प्रकृति के साथ खिलवाड़ करना जैसा कोई भी कार्य धर्म के विपरीत है। सृष्टि में पदार्थों में संतुलन बनाए रखने के लिए यजुर्वेद में एक श्लोक वर्णित है-

ओम द्यौः शान्तिरन्तरिक्षँ शान्तिः
पृथिवी शान्तिरापः शान्तिरोषधयः
शान्तिः।
वनस्पतयेः शान्तिर्विश्वे देवाः
शान्तिर्ब्रह्म शान्तिः सर्वं शान्तिः
शान्तिरेव शान्तिः सा मा शान्तिरेधि।।
ओम शान्तिः शान्तिः शान्तिः।।

इस श्लोक से ही मानव को प्राकृतिक पदार्थों में शांति अर्थात संतुलन बनाए रखने का उपदेश दिया गया है। श्लोक में पर्यावरण समस्या के प्रति मानव को सचेत आज से हजारों साल पहले से ही किया गया है। पृथ्वी, जल, औषधि, वनस्पति आदि में शांति का अर्थ है, इनमें संतुलन बने रहना। जब इनका संतुलन बिगड़ जाएगा, तभी इनमें विकार उत्पन्न हो जाएगा।

धर्म है पर्यावरण की रक्षा करना

सनातन धर्म में 'वृक्ष देवो भव, सूर्य देवो भव कहकर धर्म को प्रकृति से जोड़ा गया है। स्मृति ग्रंथों में नदियों, तालाबों में मल-मूत्र विसर्जन कर प्रकृति को विकृत करने को पांच महापापों की श्रेणी में रखा गया है। धर्म में प्रकृति का महत्व है, पर्वतवासिनी माता पार्वती, जो अन्नपूर्णा हैं, उनके हाथ में अस्त्र-शस्त्र और शास्त्र हैं।

भगवान शंकर की जटाओं से गंगा निकलती है और वह गले में सर्पहार पहनते हैं। शेषनाग भगवान विष्णु जी की छत्र-छाया करते हैं, वह क्षीरसागर में विश्राम करते हैं। समस्त नवग्रह जो इस ब्रम्हाण्ड की देन है और अन्य ग्रहों व तारों की अपेक्षा हमसे नजदीक हैं। इसीलिए इनका प्रभाव धरती पर पड़ता है, जिसे धर्म इन प्राकृतिक घटनाओं जैसे सूर्यग्रहण और चंद्रग्रहण के धरती और मनुष्यों पर पडने वाले प्रभावों का विवेचन करता रहा है। भजनों में, कीर्तन में, जप, तप में हम जिस धर्म को धारण करते हैं और वास्तव में जिसकी प्रेरणा ईश्वर हमको देता है, उसका ही पता यही है कि वह धर्म है पर्यावरण की रक्षा करना।

पर्यावरण है धरती का सुरक्षा कवच

पर्यावारण इस धरती का रक्षा कवच है, सूर्य की हानिकारक पराबैगनी किरणों से आजोन गैस की परत ही बचाती है। दुर्गासप्तशती का प्रारंभ ही देवी कवच से होता है। इसमें समस्त देवियों से प्रार्थना होती है कि वह चारों दिशाओं में हमारी रक्षा करें। हर दिशा में हमारी रक्षा करें। अर्गलास्तोत्र में देवी से प्रार्थना होती है-

देहि सौभाग्यं आरोग्यम देहि मे परमां श्रियम।

संपूर्ण दुर्गासप्तशती में प्रत्येक प्राणी के स्वास्थ्य और श्रीवृद्धि की कामना है। देवी का अर्थ ही प्रकाश है। नवदुर्गा तो प्रकृति की पोषक शक्तियां हैं और कोई नहीं। दैहिक, दैविक और भौतिक को ही त्रिदेव यानी ब्रह्मा (सृष्टि), विष्णु (पालन) और महेश (संहार) हैं। तीन ही देवियां हैं। सभी का संदेश पर्यावरण की रक्षा है।

प्रकृति ने दिया शरीर

आत्मा शरीर को धारण करता है, यह शरीर जो इस प्रकृति का दिया है, वह एक दिन नष्ट हो जाएगा। शेष रहेगा तो आत्मा, जिसे परमात्मा यानी ईश्वर में विलीन होना है। यह प्रकृति सत्य है इसीलिए मनुष्य को प्रकृति की रक्षा का कर्तव्य निभाना चाहिए, यह उसका मानवीय, धार्मिक कर्तव्य है। यही सच्चा धर्म है, धर्मग्रंथों में कहा गया है कि ब्रह्मा ने ही इस सृष्टि को बनाया है। इसीलिए प्रकृति की रक्षा करना हमारा कर्तव्य है और धर्म है।

दवा के अवशेषों का एक घातक कॉकटेल पी रहे हैं हम लोग

एक नया प्रदूषक तत्व पर्यावरण में प्रवेश कर रहा है। यह तत्व किसी की बीमारी को ठीक करता है, लेकिन इसका बाकी बचा हिस्सा पर्यावरण को बीमार कर रहा है। इससे भी बड़ी बात है कि यह लाखों लोगों को भी बीमार कर रहा है। यह जीवों पर भी असर डाल रहा है, खासकर वन्य जीवों को इससे खतरा है।

यह नया प्रदूषक हमारी दवाओं, या दवा के रसायनों का अवशेष है, जो कि अनियंत्रित और अनुपचारित रह जाता है। ओईसीडी (ऑर्गेनाजेशन फॉर कोऑपरेशन एंड डेवलपमेंट) द्वारा किए गए एक नए अध्ययन में पाया गया है कि इंसानों और जानवरों की दवाओं में इस्तेमाल होने वाले 2,000 से अधिक एक्टिव इनग्रेडिएंट्स के एक बड़े हिस्से को नियंत्रित नहीं किया जा रहा है। एक बार उनके पर्यावरण में पहुंच जाने के बाद उनके खतरे का अभी तक मूल्यांकन नहीं किया गया है। हर साल ज्यादा से ज्यादा ऐसे एक्टिव इनग्रेडिएंट्स के इस्तेमाल की मंजूरी दी जाती है। इस तरह, यह पर्यावरण में ऐसे अनियंत्रित अवशेषों का भंडार बढ़ता जा रहा है।

दवा के निर्माण, प्रयोग और निपटान से लेकर दवा बनाने के सभी चरणों में ये अवशेष हमारे पर्यावरण, जैसे जल निकायों, नदियों, हवा और भोजन में शामिल हो रहा है, लेकिन इसका सबसे बड़ा स्रोत इंसान के शरीर में दवा के अवशोषण की प्राकृतिक प्रक्रिया है।

हम जिन दवाओं का सेवन करते हैं, उसका 30 से 90 फीसद हिस्सा मल और मूत्र के जरिए बाहर निकाल देते हैं। इन अवशेषों में हमारे द्वारा खाई गई दवाओं के एक्टिव इनग्रेडिएंट्स मौजूद रहते हैं। एक बार जब उन्हें बिना उपचारित किए सीवर और नालियों में बहा दिया जाता है, तो वे हमारे पर्यावरण या लोगों के शरीर में पहुंच जाती हैं। एक्सपायर और इस्तेमाल नहीं की गई दवाओं को भी डंपिंग साइट्स और लैंडफिल में फेंक दिया जाता है।

उदाहरण के लिए अमेरिका का ही मामला देखें, जहां हर साल मरीजों को दी गई 4 अरब दवाओं का 33 फीसद हिस्सा कूड़े में फेंक दिया जाता है। हमारे सीवेज सिस्टम इस तरह के एक्टिव इनग्रेडिएंट्स को शोधित करने के लिए नहीं बनाए गए हैं, जिससे उनकी मौजूदगी ज्यादा व्यापक हो जाती है।

अध्ययन के मुताबिक, दुनिया भर में ऐसे अवशेष या एक्टिव इनग्रेडिएंट्स नदी-तालाबों के पानी, जमीन के नीचे के पानी और नल के पानी में पाए गए हैं। इस अअध्ययन में भारत में विभिन्न जल स्रोतों में 31-100 ऐसे अवशेष पाए गए हैं।

रिपोर्ट के मुतबिक, चूंकि दवाओं को कम मात्रा में जीवित जीवों (लिविंग ऑर्गेनिज्म) के साथ संपर्क के लिए तैयार किया जाता है, ऐसे में थोड़ा सा जमावड़ा भी मीठे पानी के पारिस्थिति-तंत्र पर असर डाल सकता है। इसका मतलब है कि किसी शख्स द्वारा खाई गई दवा का अवशेष किसी दूसरे इंसान के शरीर में प्रवेश करता है, जबकि वह उस बीमारी से पीड़ित नहीं है। आसान शब्द में कहें तो, यह गलत बीमारी के लिए गलत दवा लेने या बिना वजह दवा लेने जैसा है। और इसका बुरा असर होता है।

ओईसीडी की रिपोर्ट में एक अध्ययन के हवाले से बताया गया है कि गर्भनिरोधक गोलियों में एक्टिव सब्सटेंस मछली और उभयचरों के स्त्रीकरण का कारण बना है। इस अध्ययन में आगे कहा गया है कि मनोचिकित्सा में इस्तेमाल होने वाली दवा फ्लूक्सेटिन के अवशेषों ने मछलियों के व्यवहार को बुनियादी रूप से बदल कर उन्हें कम जोखिम प्रतिरोधी बना दिया। डाउन टू अर्थ और सेंटर फॉर साइंस एंड एन्वायरमेंट की एक नई आने वाली किताब में बताया गया है कि इस तरह के अवशेष रोगाणुरोधी प्रतिरोध (एंटीमाइक्रोबॉयल रेजिस्टेंस) के लिए जिम्मेदार हैं। अनुमान है कि वर्ष 2050 तक, एंटीबायोटिक रेजिस्टेंस की वजह से एक करोड़ लोग मौत का शिकार होंगे, जिनमें से ज्यादातर विकासशील देशों में रहने वाले होंगे। भारत दुनिया में एंटीबायोटिक दवाओं का सबसे बड़ा उपभोक्ता है।

इस संकट को जो चीज और बढ़ाती है, वह है इन इनग्रेडिएंट्स के पर्यावरण पर दीर्घकालिक असर की वैज्ञानिक समझ का अभाव। उदाहरण के लिए, पर्यावरण में नुकसान को लेकर इनमें से अधिकांश का अध्ययन नहीं किया गया है। यहां तक कि, हम पर्यावरण में उनकी मौजूदगी के बारे में कुछ खास जानते भी नहीं हैं। करीब 88त्न इंसानी दवाओं की पर्यावरण विषाक्तता को लेकर आंकड़े तक नहीं हैं।

एक शख्स को किसी खास बीमारी में इस्तेमाल के लिए दिए जाने के उलट, कई दवाओं के अवशेषों का पर्यावरण में स्वतंत्र रूप से एक कॉकटेल बन जाता है जिसके असर या इंसानों के साथ संपर्क के बारे में शायद ही कोई जानकारी है। रिपोर्ट में कहा गया है, इस बात के ज्यादा से ज्यादा साक्ष्य सामने आ रहे हैं कि दवाओं का मिश्रण संयुक्त विषाक्तता (यानी एडिटिव इफेक्ट) को एकाकी विषाक्तता की तुलना में ज्यादा खतरनाक बना देता है।

ग्रीन कार से पर्यावरण बचाने का संदेश दे रहा मेरठ का यह शख्स

मेरठ। देश में वायु प्रदूषण के बढ़ते स्तर को देखते हुए मेरठ के रहने वाले अशोक गोयल अपनी ग्रीन कार से लोगों को पर्यावरण के प्रति जागरूक करने में लगे हैं. जनता को पर्यावरण संरक्षण के प्रति जागरूक करने के लिए गोयल ने अपनी कार को हरी घास के कारपेट से सजा लिया है. जब यह कार रास्ते पर निकलती है तो लोग इसको देखते रह जाते हैं और जब यह कहीं खड़ी होती है तो लोग इसके साथ सेल्फी खींचने लगते हैं. कार के मालिक अशोक गोयल का कहना है कि वह जनता को संदेश देना चाहते हैं कि पर्यावरण से खिलवाड़ ना करें पर्यावरण को साफ सुथरा बनाए रखें और इसके लिए उन्होंने अपनी कार को इस तरीके से बनवाया है. गोयल का कहना है कि हर किसी को ये ठान लेना चाहिए कि वह भी पर्यावरण को दूषित नहीं करेगा। अशोक गोयल का कहना है कि उन्हें एक दिन ख्याल आया कि इस तरीके से एक कार को बनाकर घुमाया जाए तो लोग पर्यावरण के लिए जागरूक होंगे और आज ये कार चर्चा का विषय बन गयी है।

मॉन्ट्रियल प्रोटोकॉल : जिसने धरती को गर्म होने से रोका

ओजोन परत को नष्ट करने वाले क्लोरोफ्लोरोकार्बन (सीएफसी) को रोकने के लिए 1987 में एक अंतर्राष्ट्रीय समझौता किया गया था, जिसे मॉन्ट्रियल प्रोटोकॉल कहा गया। यह पहली अंतरराष्ट्रीय संधि है, जिसने ग्लोबल वार्मिंग की दर को सफलतापूर्वक धीमा किया है।

एनवायर्नमेंटल रिसर्च लेटर्स में प्रकाशित इस नए शोध से पता चला है कि मॉन्ट्रियल प्रोटोकॉल की वजह से आज वैश्विक तापमान काफी कम है। मध्य शताब्दी तक पृथ्वी औसत से कम-से-कम 1 डिग्री सेल्सियस ठंडी होगी, जो कि समझौते के बिना संभव नहीं था। आर्कटिक जैसे क्षेत्रों में शमन (मिटिगेशन) भी अधिक हुआ है। यहां तापमान के 3 डिग्री सेल्सियस से 4 डिग्री सेल्सियस तक बढ़ने की आशंका थी, जो प्रोटोकॉल की वजह से रुक गया है।

प्रमुख शोधकर्ता ऋषभ गोयल ने कहा कि, क्लोरोफ्लोरोकार्बन (सीएफसी), कार्बन डाइऑक्साइड (सीओ2) ग्रीनहाउस गैस की तुलना में हजारों गुना अधिक शक्तिशाली होती है। इसलिए मॉन्ट्रियल प्रोटोकॉल ने न केवल ओजोन परत को बचाया, बल्कि इसने ग्लोबल वार्मिंग को भी कम कर दिया।

मॉन्ट्रियल प्रोटोकॉल का क्योटो समझौते की तुलना में ग्लोबल वार्मिंग पर अधिक प्रभाव पड़ा है। क्योटो समझौते को विशेष रूप से ग्रीनहाउस गैसों को कम करने के लिए डिज़ाइन किया गया था। जहां क्योटो समझौते के तहत की गई कार्रवाई से सदी के मध्य तक तापमान में केवल 0.12 डिग्री सेल्सियस की कमी आई, वही मॉन्ट्रियल प्रोटोकॉल के शमन (मिटिगेशन) से तापमान 1 डिग्री सेल्सियस कम हुआ।

मॉन्ट्रियल प्रोटोकॉल ने अंटार्कटिका के आसपास के वायुमंडलीय सर्कुलेशन को कैसे प्रभावित किया, यह जानने के लिए टीम ने निष्कर्ष निकाले। शोधकर्ताओं ने वायुमंडलीय रसायन के दो परिदृश्यों के तहत वैश्विक जलवायु का मॉडल तैयार किया। पहला, मॉन्ट्रियल प्रोटोकॉल के साथ और दूसरा इसके बिना। उन्होंने सिमुलेशन के आधार पर सीएफसी विकास दर को 3 फीसदी प्रति वर्ष माना, जोकि मॉन्ट्रियल प्रोटोकॉल की स्थापना के समय माने गए सीएफसी विकास दर से बहुत कम था। शोधकर्ताओं ने पाया कि सीएफसी को कम करने में मॉन्ट्रियल प्रोटोकॉल का बहुत बड़ा प्रभाव था।

जलवायु परिवर्तन को कम करने में मॉन्ट्रियल प्रोटोकॉल ने अहम भूमिका निभाई है। उदाहरण के लिए, प्रोटोकॉल ने उत्तर अमेरिका, अफ्रीका और यूरेशिया के 0.5 डिग्री सेल्सियस से 1 डिग्री सेल्सियस के बीच तापमान बढ़ने से रोका है। मध्य शताब्दी तक इन क्षेत्रों में तापमान को 1.5 डिग्री सेल्सियस से 2 डिग्री सेल्सियस तक बढ़ने से रोका है। वहीं आर्कटिक का तापमान 3 डिग्री सेल्सियस से 4 डिग्री सेल्सियस के आसपास पहुंचने से बचाया।

शोधकर्ताओं ने यह भी पाया कि प्रोटोकॉल के कारण बर्फ के पिघलने से बचा जा सकता है, क्योंकि आज गर्मियों के दौरान आर्कटिक के चारों ओर समुद्री बर्फ की मात्रा लगभग 25 फीसदी से अधिक है। शोधकर्ता डॉ मार्टिन जकर ने कहा, मॉन्ट्रियल प्रोटोकॉल तीन दशकों से अधिक समय से ग्लोबल वार्मिंग प्रभावों को कम कर रहा है। मॉन्ट्रियल ने सीएफसी को कम किया है, इसका अगला बड़ा लक्ष्य कार्बन डाइऑक्साइड (सीओ2) उत्सर्जन को शून्य करना है।

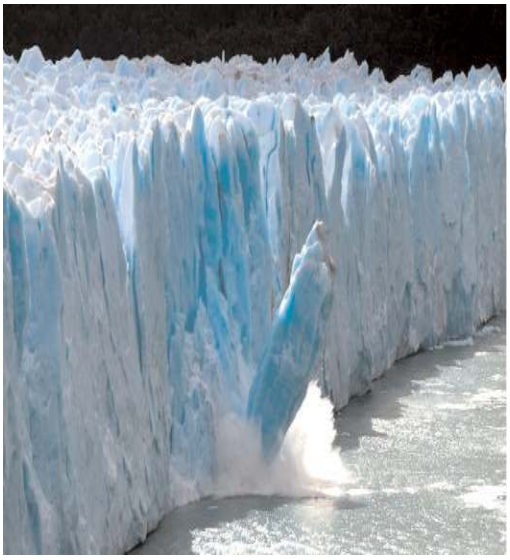

समुद्रों के स्तर में चिंताजनक बढ़त 2019 में रिकॉर्ड : डब्ल्यूएमओ

जलवायु परिवर्तन और बढ़ते वैश्विक ताप का स्पष्ट असर दिखाई दे रहा है। धरती का ताप बढ़ने के साथ ही समुद्र के स्तरों में भी बढ़ोत्तरी हो रही है। 2019 में महासागरों का वैश्विक औसत समुद्र स्तर 1993 के बाद से सर्वाधिक उच्च स्तर पर रिकॉर्ड किया गया है। जनवरी, 1993 से सेटेलाइट के जरिए समुद्रों के स्पष्ट उच्च स्तर के रिकॉर्ड को मापना शुरु किया गया था। यह भी गौर किया गया है कि समुद्रों के स्तर में बढ़ोत्तरी में एकरूपता नहीं है और समुद्रों में पीएच मानक घट रहा है जिससे अम्लीकरण भी तेज हुआ है। स्पेन की राजधानी मद्रिद में 25वें कांफ्रेंस ऑफ पार्टीज (कॉप 25) के दौरान विश्व मौसम संगठन (डब्ल्यूएमओ) ने 3 दिसंबर को जारी स्टेट ऑफ ग्लोबल क्लाइमेट 2019 रिपोर्ट में यह तथ्य उजागर किए हैं। समुद्रों के स्तर में बढ़ोत्तरी के लिए डब्ल्यूएमओ ने अपनी रिपोर्ट में लगातार पिघल रही बर्फ की चादरों और जलवायु परिवर्तनों के कारकों को जिम्मेदार ठहराया है। मसलन मध्य और पूर्वी प्रशांत महासागर की सतह के क्रमशः ठंड और गर्म होने यानी ला-नीना और अल-नीनो के बीच बदलाव के चरण में समुद्रों के स्तर में फर्क पड़ता है। हालांकि यह छोटी अवधि की प्रवृत्ति है।

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक सोनल मेहता केलिए प्रतीक्षा ग्राफिक्स, 127 देवी अहिल्या मार्ग, इंदौर (म.प्र.) से मुद्रित एवं 209-बी शहनाई रेसीडेंसी-2 कनाड़िया रोड इंदौर (म.प्र.) से प्रकाशित। संपादक: डॉ. सोनल मेहता फोन : 0731-2595008 Mail.sonal12mehta@yahoo.co.in 9755040008